Matthew 18:15-35
मत्ती १८: १५-३५

Biblical Conflict
बाइबिल का संघर्ष

Pastor Bryan Chapell
पास्टर ब्रायन चैपल

1.14.18
१.१४.१८

Introduction: When Tornadoes Shape Churches
प्रस्तावना : टोर्नेडो जब कलीसिया को आकार देते है

Key Question: How Do We "Speak the Truth in Love" for the sake of our witness of Jesus when there are tensions among us?
मुख्य सवाल : हम "सत्य को प्यार" से कैसे बोले, जहाँ तनाव हो और प्रभु येशु की गवाही की खातिर

I. A Process of Handling Conflict Biblically
   A. Step One: One-on-One (v.15)
      पहला कदम : एक इंसान से (व् १५)

   B. Step Two: Go-in-Two's (v. 16)
      दूसरा कदम : एक दो जन को साथ लेके (व् १६)

   C. Step Three: Go to Church (v. 17)
      तीसरा कदम : कलीसिया जाओ (व् १७)

II. The Purposes of Handling Conflict Biblically
बाइबिल के संघर्ष का संचालन करने का उद्देश्य

   A. Rescue (v. 15)
      बचाव (व् १५)

   B. Reconciliation (vv. 15-18)
      सुलह (व् १५-१८)

   C. Mission (18-20)
      सेवा कार्य (व् १८-२०)

   D. Discipleship (17)
      शिष्यत्व (व् १७)

III. Overcoming Problems of Handling Conflict Biblically Translate
संघर्ष को बाइबिल के अनुसार काबू पाने का व्यवहार

A. What about Not Judging Others?
दूसरों को न्याय नहीं करने का क्या ?

B. What if the “Fault” Doesn’t Concern Me?
अगर उनकी "गलती" से मुझको कोई सम्बन्ध नहीं है?

C. What if Reconciliation Attempts Don’t Work?
अगर सुलह के प्रयास काम नहीं आये तो क्या

Conclusion: Conversations and Generations

निष्कर्ष : वार्तालाप और पीढ़ियों